DSE-01

ORIGIN OF THEORIES OF RELIGION-MAX MULLER

Dr. Utpal Kumar Chakraborty
Department of Sociology
ABM College, Jamshedpur

धर्म का प्रादुर्भाव

धर्म कैसे शुरू हुआ?

धर्म कैसे विकसित हुआ?

यह विकासवादी चिन्तन डार्विन के विकासवाद सिद्धांत से प्रभावित था।

प्रकृतिवाद (मैक्समूलर)

इस सिद्धांत के मुख्य प्रतिपादक मैक्समूलर रहे हैं। मैक्समूलर ने धर्म की प्रकृतिवादी एवं अनुभूतिपरक व्याख्या प्रस्तुत की मैक्समूलर के अनुसार धर्म को यदि हमारी चेतना के वैध तत्व के रूप में स्थान प्राप्त करना है, तो इसे अन्य समस्त ज्ञान की भांति इन्द्रियात्मक अनुभव के प्रारम्भ होना चाहिए।

मैक्समूलर ने वेदों के आधार पर प्रकृतिवाद के सिद्धांत को प्रस्तुत किया। मैक्समूलर उन अनुभूतियों की व्याख्या करता है जिनके कारण धर्म की उत्पत्ति हुई। इनके आत्मवाद में प्राकृतिक शक्तियों के प्रति श्रद्धा और भय मिश्रित भावनाओं के कारण धर्म का विकास हुआ।

मैक्समूलर ने प्रत्येक जड़ व चेतन पदार्थ में एक जीवित सत्ता का विश्वास किया है वे कहते है कि आदि मानवों ने विभिन्न प्राकृतिक शक्तियों जैसे सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, वायु, जल, पेड़- पौधों के प्रति पूजा और आराधना द्वारा अपनी श्रद्धा को दिखाते है जिससे वे प्राकृतिक के दुष्परिणामों से बचकर उसकी शक्ति से लाभ उठा सके। इस प्रकार प्रकृतिवाद मानव की संवेदनाओं पर प्रकृति की शक्तियों व चमत्कारों के प्रभावों की प्रतिक्रिया है।

उनके अनुसार देवताओं के नाम प्राकृतिक तथ्यों के नाम पर रखे गये हैं। मैक्समूलर ने जोर देकर कहा कि प्रकृति की वस्तुओं के प्रति भय या प्रेम व आदर का व्यवहार एक बीमार दिमाग की उपज था जिसने जीवनरहित चीजों में जीवन और वे सभी शक्तियां डाल दीं जो जीवन से संबंधित हैं।

यह पुन: प्रारम्भिक मनुष्य की मूर्खता से उपजा जिसके मूल में उसका भाषिक अहापोह था ये भाषिक गड़बड़ियां जैसे सूरज उगता और डूबता है या आंधी बारिश भेजती है और पेड़ पत्तियां व फूल पैदा करते हैं इस धारणा को मजबूत बनाने में सफल रहीं कि सूरज, पेड़ तथा आंधी में कोई न कोई शक्ति अन्तर्निहित है। इस प्रकार एक आत्मा को बीच में लाना जरूरी हो गया जो उनके नाम पर होने वाले अनुष्ठानों का आलबंन है।

मैक्समूलर के विचारोनुसार मनुष्य के सामने सबसे पहली वास्तविकता प्रकृति के रूप में ही दृष्टिगोचर हुई, और उसने प्राकृतिक तथ्यों को देखकर आश्चर्य का, भय का, शोभा और सौन्दर्य का अनुभव किया। प्रकृति के तथ्य स्थायी और बार-बार प्रकट होने के कारण ही प्राकृतिक कहलाए।

प्रकृति का ऐसा कोई पक्ष नहीं है, जो हमारे मन में एक अनन्त की यह अत्यधिक अनुभूति जगाने के योग्य नहीं है, जो हमारे चारों ओर व्याप्त है, हम पर शासन करता है।